Write in file

संस्कृत

VIII

Page No.
Date 25.4.2020

चतुर्थः पाठः सदैव पुरतो निधेहि चरणम्

(क) चल चल पुरतो निधेहि चरणम् ।
सदैव पुरतो निधेहि चरणम् ॥

प्रसंग → प्रस्तुत संस्कृत गीत हमारी संस्कृत की पाठ्य-पुस्तक 'रुचिरा' भाग-तीन के 'सदैव पुरतो निधेहि चरणम्' नामक पाठ से लिया गया है इस गीत के माध्यम से कवि 'श्रीधर भास्कर वर्णेकर' ने मनुष्य को चुनौतियों को स्वीकार करके आगे बढ़ने का संदेश दिया है।

सरलार्थ / हिन्दी अनुवाद → हे मानव चलो, चलो आगे कदम बढ़ाओ, सदा हम आगे कदम बढ़ाते रहो।

(ख) गिरिशिखरे ननु निजनिकेतनम् ।
विनैव यानं नगारोहणम् ॥
बलं स्वकीयं भवति साधनम् ।
सदैव पुरतो - - - - - - - - ॥

अनुवाद → पर्वत की चोटी को अपना रहने का स्थान समझो जहाँ तुम्हें बिना यान (हवाईजहाज) के पहुँचना है। बल को अपना साधन मानकर सदा अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाओ।

(ग) पथि पाषाणा विषमाः प्रखराः ।
हिंस्राः पशवः परितो घोराः ॥
सुदुष्करं खलु यद्यपि गमनम् ।
सदैव पुरतो - - - - - - ॥

अनुवाद → रास्ते में टेढ़े मेढ़े और नुकीले पत्थर हैं। चारों तरफ भयंकर व हिंसक पशु हैं। जहाँ जाना कठिन है फिर भी सदा अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाओ।

(घ) जहीहि भीतिं भज भज शक्तिम् ।
विधेहि राष्ट्रे तथाऽनुरक्तिम् ॥
कुरु कुरु सततं ध्येय-स्मरणम् ।
सदैव पुरतो - - - - - - ॥

अनुवाद → डर का त्याग करके शक्ति को याद रखो और अपने देश से प्रेम करो। अपने लक्ष्य को निरन्तर ध्यान में रखते हुए सदा अपने कदमों को आगे रखो।